गृहस्थाश्रम को स्वर्ग का साधन समझें

कन्हैयालाल आर्य, ट्रस्टी
परोपकारिणी सभा अजमेर

गृहस्थ और सुख ? यह तो कुछ अनोखी बात है। इसमें इतने दुःख हैं कि आरम्भ से ही इसे दुःखों का घर समझा जाता है। आधुनिक काल में जब कि हमने अपनी इच्छाओं और आवश्यकताओं को बहुत बढ़ा रखा है तो कुछ बात यथार्थ प्रतीत होने लगती है, परन्तु यदि गम्भीरता पूर्वक इस पर विचार किया जाये तो महर्षि मनु की यह बात सही है कि गृहस्थ आश्रम व्यवस्था की दृष्टि से ज्येष्ठ तथा श्रेष्ठ सिद्ध है।

गृहस्थाश्रम तो लोक और परलोक दोनों को सुधारने का एक माध्यम है। इस माध्यम को मानव ने अपने स्वार्थ, आलस्य, प्रमाद, अतिवासना तथा लोभ और मूर्खता से बिगाड़ रखा है। हम स्वयं ही जंजीरे घड़ते हैं और अपने हाथ–पांव में बांध लेते हैं और फिर चिल्लाने लगते हैं कि हम बांधे गये। गृहस्थाश्रम का तो इसलिए निर्माण किया गया ताकि लम्बी जीवन यात्रा में नर या नारी अकेला थक न जाये। लम्बी यात्रा में साथी साथ हो तो यात्रा सरल बन जाती है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार इन पांचों को ठीक मर्यादा में रखने का सुन्दर साधन गृहस्थ है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसे आजीवन ब्रह्मचारी विरले ही होते हैं, उन्होंने भी गृहस्थाश्रम को सर्वश्रेष्ठ कहा है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में बताया है कि:–

1. **यथा नदी नदाः सर्वे सागरे यान्ति संस्थितिम्।**
   तथैवाश्रमिणः सर्वे गृहस्थे यान्ति संस्थितिम्।।

जैसे नदी और बड़े–बड़े नद तब तक भ्रमते ही रहते हैं जब तक समुद्र को प्राप्त नहीं हो जाते। वैसे ही गृहस्थ के आश्रम में सब आश्रम स्थिर रहते हैं, बिना इस आश्रम के किसी आश्रम का कोई व्यवहार सिद्ध नहीं होता।

2. **यथा वायुं समाश्रित्य, वर्तन्ते सर्वजन्तवः।**
   तथा गृहस्थामाश्रित्य वर्तन्ते सर्व आश्रमाः।।

जैसे वायु के आश्रय पर सब प्राणी हैं वैसे गृहस्थाश्रम सब आश्रमों का आश्रय दाता है।

3. **यस्मात्त्रयोप्याश्रमिणो दानेनान्नेन चान्वहम्।**
   गृहस्थेनैव धार्य्यन्ते तस्मात ज्येष्ठाश्रमो गृही।

जिससे ब्रह्मचारी वानप्रस्थ और सन्यासी तीन आश्रमों को दान और अन्नादि देकर गृहस्थ ही धारण करता है इसीलिए गृहस्थ ज्येष्ठाश्रम है अर्थात सब व्यवहारों में धुरन्धर रहता है।

4. **स संधार्य्यः प्रयत्नेन स्वर्गमक्षयमिच्छता।**
   सुखं चेहेच्छता नित्यं योऽधार्यो दुर्बलेन्द्रियैः।

जो अक्षय मोक्ष और संसार के सुख की इच्छा करता हो, वह प्रयत्न से गृहाश्रम धारण करे। जो गृहाश्रम दुर्बल इन्द्रिय, भीरू और निर्बल पुरुषों से धारण करने योग्य नहीं है, उसको अच्छे प्रकार धारण करे।

इसलिए जितना कुछ व्यवहार संसार में है, उस का आधार गृहाश्रम है जो यह गृहस्थाश्रम न होता तो सन्तानोत्पत्ति के न होने से ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम कहां से हो सकते? जो